समानता और स्वतंत्रता के सृजक श्री गुरु रविदास जी के 649वें प्रकाश दिवस पर नासिक की समस्त संगतों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

अखिल भारतीय गुरु रविदास मार्ग परिवार, नासिक, महाराष्ट्र (Regd.) के पदाधिकारी। बाएं से शाहिर सुरेशचंद्र आहेर, दादाजी गांगुर्डे, अशोक अहिरे, हिरामण नांदगांवकर, किरण जाधव, केदार बडोदे, बाळकृष्ण ठाकरे, रमेश पाथरे, विलास गांगुर्डे, दादाजी अहिरे, रामदास डोंगरे, सिताराम जाधव, दिलीप जाधव, जगन सुरंजे, देवीलाल बिरसोने, दीपाली अहिरे आदि।

क्या आप जानते हैं? कैलिफ़ोर्निया (अमेरिका) से जनरल और आदिवासी समाज की गतिविधियों से संबंधित दो साप्ताहिक समाचार पत्र हैं, जिनमें आप अपने मार्गदर्शकों के लेख तथा समाज से जुड़ी समाचार सामग्री प्रकाशित करवा सकते हैं :

California (USA), Phone : +1 916 947 8920, Email: deshdoaba@yahoo.com

Ambedkar Times TV - Desh Doaba TV - Desh Doaba Channel - International Bahujan Bulletin

जय गुरुदेव!

धन्न गुरुदेव!

'तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ'

भावार्थ : हे प्रभु! मैं तेरी पूजा के लिए
तुझे क्या अर्पण कर सकता हूँ?
यदि मैं तेरे ही द्वारा उत्पन्न किए गए पदार्थ
तुझे अर्पित करता हूँ, तो उसमें मेरा अपना
क्या हुआ? फिर मैंने अपनी ओर से
तुझे क्या अर्पण किया?

सतिगुरु रविदास जी महाराज का अगला 650वां प्रकाश पर्व

20 फरवरी 2027 - शनिवार

विश्व मानवता की अवधारणा - बेग़मपुरा

इस ट्रैक्ट को www.begumpuramission.com से डाउनलोड करें और पढ़ें।

ट्रैक्ट नंबर 44

(रजि. नं. 179-2006-07)

प्रकाशक : श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि:)

मुख्य दफ़तर : गांव बिनपालके, निकट भोगपुर, ज़िला जालन्धर (पंजाब)

Mobile : +91 78141-42944, +91 98725-88620

GRMT/01/26/20/44

संस्था की वैबसाईट - www.begumpuramission.com

A RELIGIOUS & SOCIAL INFORMATION CENTER

बेग़मपुरा संकल्प की स्थापना हेतु सतिगुरु साहिबानों के उपदेशों तथा आदिवासी रहबरों की आवाज़ के प्रचार-प्रसार का केंद्र।

सहयोग अखिल भारतीय गुरु रविदास मार्ग परिवार (Regd.)

शॉ नं. बी-512, 5वीं मंज़िल, रुंग्टा बिज़नेस प्लाज़ा, आडगांव नाका, पंचवटी, नासिक-422 003

हिरामण नांदगांवकर +91 94226 21532, अशोक अहिरे +91 94201 25050

ट्रैक्ट नं. 44/ प्रथम वार 1000/ जनवरी 2026 / कीमत : आप पढ़े व ओरों को भी पढ़ाये

श्री गुरु रविदास जी के 649वें प्रकाश दिवस पर नासिक की समस्त संगतों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

अखिल भारतीय गुरु रविदास मार्ग परिवार, नासिक (महाराष्ट्र)

हिरामण नांदगांवकर, राष्ट्रीय ज्येष्ठ सल्लागार एवं मार्गदर्शक

प्रकाश वानखेडे, बामसेफ कार्यकर्ता, डहाणू

अशोक अहिरे, राष्ट्रीय अध्यक्ष, से.नि. मुख्याध्यापक

राष्ट्रीय संघटक, कोषाध्यक्ष, शिक्षक परिषद, दिंडोरी

किरण जाधव राष्ट्रीय सरचिटणीस

प्रकाश अहिरे समाज कार्यकर्ता

शरद हिरे, उद्योजक तथा ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता

रमेश पाथरे, राष्ट्रीय प्रवक्ता, अध्यक्ष, माहिती अधिकार जनजागृती अभियान

ऐसा चाहूं राज मैं, जहाँ मिलै सबन को अन्न।
छोट-बड़ो सब सम बसै, रविदास रहै प्रसन्न।

संत गुरु रविदास जी का यह विचार एक वैश्विक विचार है, जिसमें उन्होंने ऐसे राज्य की कल्पना की है जिसमें कोई भुखा न हो, समाज मे जो विषमताये है वो मिट जाए। संत गुरु रविदास चाहते है कि समाज मे जो छोटे-बडे लोग है वो एक समान हो, समाज में ऐसा बदलाव होगा तो संत गुरु रविदास जी आनंदित होंगे, इसे हमें यहा पता चलता है की संत गुरु रविदास का जो दृष्टिकोन है वो सामाजिक क्षमता प्रस्थापित करता है और संत गुरु रविदास के विचारों पर चलने वाले सभी ने इस बात को ध्यान मे रखना ज़रुरी है कि जिस तरह से संत गुरु रविदास जी ने उनकी बातों को रखा है, उनकी बताई बातों को अपने आचरण में लाना चाहिए और क्षमता मुलक समाज के निर्माण में हमारा सहयोग देना चाहिए। संत गुरु रविदास जी के प्रकाश के अवसर पर सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाए।

Dr. Sunita Sawarkar Assistant Professor, Dr. Ambedkar Chair in Dalit History Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University Nagpur Maharashtra.

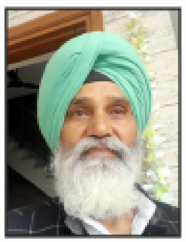

सन् 2017 में श्री गुरु रविदास महाराज जी के पदचिह्नों की खोज के दौरान, जब मैं भारत भ्रमण पर था, तभी से हिरामण नांदगांवकर जी-जो एक लेखक हैं और गुरु रविदास जी के मिशन में गहरी आस्था रखते हैं-मेरे निरंतर संपर्क में हैं। नासिक एवं उसके आसपास गुरु जी के पदचिह्नों के संबंध में उन्होंने बहुमूल्य जानकारी प्रदान की, जिसे 'गुरु रविदास प्रगासु की खोज' पुस्तक में अंकित किया गया है। अब इसी विषयवस्तु को हिंदी तथा अंग्रेज़ी संस्करण में और अधिक विस्तार के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। जय गुरुदेव! धन्य गुरुदेव!

– रूप लाल रूप

विश्व सांझीवालता, समानता, सुतंत्रता के संकल्प बेग़मपुरा के शिल्पकार सतिगुरु रविदास जी के 649वें प्रकाश पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं !

गुरु रविदास एक क्रांतिकारी महापुरुष

प्राचीन भारतीय दार्शनिक (तत्वज्ञान) के निर्माताओं में गुरु रविदास जी का नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। अत: सर्वप्रथम महाराज जी की विचारधारा समझना अत्यावश्यक है। महाराज जी को हमें क्या समझाना है, इस बात को हमें समझना बहुत ही ज़रुरी है। महाराज जी के कौन से अभिप्राय स्वीकृत है या निषिद्ध हैं इस मर्म को समझे बिना महाराज जी की विचारधाराओं की वास्तविकता समझना मुश्किल है। सामाजिक एवं राजनैतिक बातों का कौन सा स्वरुप महाराज जी को अपेक्षित था, इस बात को भी समझना उतना ही महत्वपूर्ण होगा।

गुरु महाराज जी को जातिगत समाज व्यवस्था चाहिए थी या स्वातंत्र्य, समता, बंधुता एवं न्याय पर आधारित समाज व्यवस्था चाहिए थी या जातिवर्ण विरहित समताधिष्ठित समाज व्यवस्था अपेक्षित थी? गुरु महाराज जी हमें सीधी-साधी जीवन हितकारी पद्धती बताना चाहते थे या जप, तप, व्रत, तीर्थाटन, कर्मकाण्ड, पूजाअर्चा करना सिखाना चाहते थे या सभी वैदिक कर्मकांडों की बातों का खण्डन करना या अनेक देवी-देवताओं की पूजा या एक ही ईश्वर की आराधना करने का उपदेश देना चाहते थे? इन सारी बातों को हमें बौद्धिक तथा वैचारिक पटल पर समझना बहुत ज़रुरी है।

तथागत गौतम बुद्ध और चार्वाक ये वैदिक एवं दैववाद के विरोध में डँट कर खड़े हुए थे। भगवान् महावीर इन्होंने मध्यम मार्ग अपनाया और गुरु रविदास, गुरु कबीर इनकी अलग सी भाषा-शैली की वजह से इन विभूतियों के विचार जनमानस में जल्द ही प्रस्थापित हो गए। मात्र उनके विचार वैदिकों के दिलों को सीधे निशाना बनाते थे। गुरु रविदास जी की कार्यप्रणाली से समाज में बढ़ती हुई दुष्टप्रवृत्ति खत्म हुई। अन्याय-अत्याचार दूर हुएं और अधर्म के बंधन टूँट कर गिर गएं। पाखण्डवाद का पर्दाफाश हुआ। मानवता की नींव रची गयी। गुरु रविदास जी के अमृतवाणी से संसार को मानवता की एक नई दिशा प्राप्त हुई। इसीलिए भारतीय संत-महात्माओं के विशाल आकाश में सर्वाधिक चमकने वाला जो धरुवतारा है, वह गुरु रविदास जी महाराज ही हैं।

गुरु रविदास जी के महानिर्वाण के बाद उनके लिखे हुए एवं शिष्यगणों की लिखी हुई ग्रंथसंपदा जो प्रचण्ड वैचारिक, बौद्धिक एवं विद्वत्तापुर्ण थी, जलाकर नष्ट कर दी गयी। इसका कारण गुरु महाराज के संत-साहित्य में इतनी जबरदस्त ताकद थी कि तत्कालिन वैदिक ब्राम्हण संघ घबड़ाकर तिलमिला ऊठा था। इस जगह हमें एक बात जरुर उजागर करनी होगी कि, समस्त भारत देश में विशेषत: दक्षिण भारत में चमार जाति में गुरु रविदास नाम की एक महान हस्ति ने जन्म लिया था, यह बात सर्व प्रथम एवं "श्री गुरु ग्रंथ साहिब" जी से पता चली। डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर जी से भी गुरु साहिब के बारे में जानने का अवसर मिला। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता काल के बाद एक झटके में दुनिया भर के चमार कौम में जागृति आ गयी।

हम श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था, पंजाब (रजि.) के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जो गुरु जी के मिशन के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

-हिरामण नांदगांवकर, नासिक (महाराष्ट्र), +91 94226 21532

विश्व मानवता की अवधारणा - बेग़मपुरा

एडवोकेट प्रो. लाल सिंह, लुधियाना, मोबाइल : 94175-57751

राग गौउड़ी रविदास जी के पदे
गौउड़ी गुआरेरी

ੴ सतिनाम करता पुरख गुर प्रसादि।।

बेगमपुरा सहर को नाउ॥दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु॥खउफु न खता न तरसु जवालु॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई॥ऊहां खैरि सदा मेरे भाई॥१॥रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही॥दोम न सेम एक सो आही॥
आबादानु सदा मसहूर॥ऊहां गनी बसहि मामूर॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै॥महरम महल न को अटकावै॥
कहि रविदास खलास चमारा॥जो हम सहरी सु मीतु हमारा॥३॥२॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब पृष्ठ 345)

गुरु रविदास जी ने इस शब्द के बीच अटल सच्चाईयां निरूपित की हैं। इनका आधार वैज्ञानिक सत्य है। यही अटल सिद्धांत है।

इस शब्द के विचारों में इतनी सरलता, इतनी स्पष्टता, इतनी गहराई, इतनी गंभीरता, इतनी विशालता और परिपक्वता निरूपित है कि इस शब्द के सृजन के बीच प्रयोग हर वाक्य (तुक) यहां तक कि हर शब्द सैद्धान्तिक गुणों का धारणी बन गया है। इसलिए शब्द की हर प्रस्तावना अपने-आप के बीच एक सिद्धांत समाकर बैठा है। इसकी पुष्टि भारत के प्रसिद्ध संगीत शास्त्रियों की राग निर्णायक कमेटी ने की है।

''गौउड़ी गंभीर प्रकृति का राग है। विलखती आत्मा कृपा की याचना करती है और अपने-आप की खोज करती है। इसलिए इस राग में गुरु जी ने मन, मति, बुद्धि, आत्मा, मौत और मुक्ति आदि गंभीर विषयों में गुरबाणी उच्चारण की हुई है।''

गुरु रविदास जी महान चिंतक हैं। उनकी दूरदृष्टि, गहरी सोच, विशाल दृष्टिकोण, विश्वव्यापी ज्ञान और चमत्कारी क्रांतिकारी वैज्ञानिक पहुंच ने 'शब्द बेगमपुरा सहर को नाउ' के बीच विश्वव्यापी विचारधारा का सृजन किया है, जो आज के विश्व के महान चिंतकों की विचारधारा की अपेक्षा कहीं अधिक वैज्ञानिक तर्कयुक्त और अमल के बीच पूरी उतरने वाली है। इस की परिपक्वता करते हुए डॉ. जीत सिंह शीतल जी लिखते हैं -

''इस संदर्भ या प्रसंग में जब हम भक्त (गुरु) रविदास के ऊपरी शब्द (बेगमपुरा सहर को नाउ) को देखते हैं, तो बड़े-बड़े समाज वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी और राजसी शास्त्री चकित रह जाते हैं। मार्क्स लेनिन आदि भी शायद ऐसे सम-देश सम-राज, सम-शहरी, सम-अधिकारी और मानव वतनगाह का संकल्प न कर सके।''

इस लेख में एक अन्य स्थान पर डॉ. शीतल जी अटल सच्चाई का भेद खोलते हुए लिखते हैं -

''किसी महान पुरुष ने देश की सीमाओं से उसके हितों से ऊपर उठकर सारे विश्व के ऊपर नज़र नहीं दीं। यही कारण है कि आज तक अंतर देशों के झगड़े खत्म नहीं हुए।''

डॉ. जीत सिंह शीतल के इन कथनों से अटल सच्चाई से तो पर्दा उठाया ही गया है। उन्होंने गुरु रविदास जी को एक महानतम चिंतक के तौर पर भी तर्क के साथ दलीलें देकर सिद्ध किया है। इस संबंध में डॉ. शीतल स्वयं ही लिखते हैं कि-

''किसी भगत (गुरु) ने ऐसे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक या भौगोलिक अंतर्राष्ट्रीय देश की स्थापना की बात नहीं की है। आज से 600 साल पूर्व ऐसे वतन या सर्वमानवीय देश के बारे में सोचना और घोषणा करना, उसकी रूपरेखा तैयार करना गुरु रविदास जी जैसे विश्व-मानव, देवता समान पुरुष और गुरु रूप भगत के हिस्से ही आ सका है। हमारा सिर अपने आप ही उनकी महान प्रतिभा के आगे झुक जाता है।''

डॉ. सुरेंद्र कुमार देवेश्वर गुरु रविदास जी की 'बेगमपुरा' की विचारधारा का ज़िक्र करते हुए, उन को रूसो और वाल्टेयर का पूर्वज बताते हैं, वो लिखते हैं -

''रूसो के स्वतंत्रता, बराबरी और भाईचारे के जिन संयुक्त विचारों के बारे में यह समझा जाता है कि, इस संसार के बीच एक नई विचारक क्रांति के जन्मदाता हैं। वास्तव में यह विचार तो यह भारतीय संत परंपरा के बीच चौदहवीं पन्द्रहवीं सदी के बीच प्रचार किए गए। संत रविदास की वाणी और प्रचार के ये समस्त विचार थे। यूं गुरु रविदास जी वैचारिक क्रांति के बीच रूसो, वाल्टेयर के भी पूर्वज माने जाते हैं।''

इस कथन से स्पष्ट है कि गुरु रविदास जी विश्व के सबसे पहले क्रांतिकारी विचारधारक और प्रचारक थे।

डाक्टर देवेश्वर बेगमपुरा की विचारधारा का अध्ययन करने के उपरांत नीचे लिखे निष्कर्ष पर पहुंचते हैं -

''इस शब्द की अंतरात्मा राजश्री तौर से लोकतंत्र, आर्थिक तौर से समाजवादी राज और आत्मिक तौर से कलात्मक जगत, जिस में सत्यम, शिवम, सुंदरम का पहरा है। हर व्यक्ति के सर्वपक्षीय विकास के लिए यहां पूर्ण अवसर प्राप्त हैं।''

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट हो गया है, कि गुरु रविदास जी विश्व के सबसे पहले क्रांतिकारी राजनीतिक और आर्थिक विकास के लिए समाजवादी लोकतंत्र के चिंतक, सामाजिक तौर से विश्व भाईचारे के सृजक और उच्च स्तर के अध्यात्मवादी हैं। इसलिए वह दुनिया के पहले महानतम चिंतक हैं -

इतनी महानता के शिखर पर पहुंच कर भी गुरु ग्रंथ साहब को मानने वाले और विचार करने वाले सिख जगत के विद्वानों को गुरु रविदास जी की विचारधारा को दुनिया में उजागर कर के प्रचार करने का विचार तक भी क्यों नहीं आया ? इसका क्या कारण है ? इसका उत्तर सरदार करतार सिंह वैद्य बड़े निर्भीक होकर देते हुए स्पष्ट करते हैं, कि गुरु रविदास जी अछूत होने के कारण गुरमति के क्षेत्र में पछाड़े गए हैं। वे लिखते हैं -

गुरु रविदास जहां उच्च कोटि के अध्यात्मवादी थे, वहां वह समाजवादी विचारधारा के नेता भी थे। कल्याणकारी राज (Welfare State) के समर्थक और इंकलाब के पुजारी थे। गुरु रविदास जी का जलाल इस कारण अधिक लोकप्रिय नहीं बन सका, जितना कि गुरमति बन सका है, क्योंकि इन की नाम लेवा सेवक आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक तौर से प्रवीण नहीं थी। जागरूक नहीं थी। पिछड़ी जातियों के गुरु पीर भी पछाड़े जाते रहे हैं, जबकि वह भी उसी स्तर तकमील की बात कहते थे, जिसकी दूसरे कहते थे।

सरदार वैद्य ने गुरु रविदास जी की विचारधारा विशेषकर बेगमपुरा की अद्वितीय चमत्कारी विचारधारा का लोकप्रिय न होने के कारण बड़े स्पष्ट और निर्भय होकर बयान किए हैं –

1. पहला कारण गुरु रविदास जी के नाम लेवा लोग हर पक्ष से ही जागरूक नहीं थे, जब कि गुरमति के बीच ऊंची जातियों से संबंधित गुरुओं के नाम लेवा लोग हर पक्ष से जागरूक थे।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक तौर से पिछड़े अछूतों के गुरुओं को पछाड़ा जाता है और उच्च जाति के गुरुओं को उभारा जाता है।

3. वैद्य साहिब के उपरोक्त पैरे के बीच से यह भी विचार बनता है, कि गुरु ग्रंथ साहिब में जात पात और छुआछूत के खंडन के बावजूद भी गुरु घर के ऊंची जाति के नाम लेवा हिंदुओं की तरह ही छुआछूत का पालन करते हैं। परिणाम स्वरूप वह गुरु रविदास जी को गुरु ही नहीं मानते हैं, हालांकि उनकी वाणी के बीच में से लिए वाक्यों को भी 'गुरु वाक' ही स्वीकृत किया जाता है।

अत: उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट हो गया है कि गुरु रविदास जी के शब्द बेगमपुरा की विचारधारा दुनिया की विचारधाराओं की अपेक्षा हर तरफ से उत्तम है। इस प्रकार की विचारधारा सुक्रात, प्लैटो, थामसमूर, रूसो, वाल्टेयर, मार्क्स, एंजेल्स, लेनिन आदि ने भी दी है।

यह लेख एडवोकेट प्रोफेसर लाल सिंह जी द्वारा लिखित पुस्तक
'सटीक बाणी श्री गुरु रविदास जी और तत्व सिद्धांत' से लिया गया एक अंश है।
पूरी पुस्तक पढ़ने के लिए Visit करें : www.begumpuramission.com

आइए गुरु रविदास जी की वाणी से जुड़ें

जगत गुरु, युग पुरुष, कर्मयोगी, शोषितों के मसीहा, मानवता के सहृदय, क्रांति-ज्योति, संत-सिपाही सतिगुरु रविदास महाराज जी के 649वें प्रकाश पर्व की समस्त सृष्टि को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हम हर वर्ष गुरु रविदास जी का प्रकाश पर्व अत्यंत श्रद्धा और उत्साह से मनाते हैं, परंतु उनकी वाणी से हटकर अन्य धार्मिक आडंबरों को अधिक महत्व दे देते हैं। इससे हमारे गुरुपर्व मनाने का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता। गुरु जी ने हमें क्रांतिकारी वाणी प्रदान की है, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 40 शब्द, 1 श्लोक तथा 16 रागों में अंकित है। यह वाणी मानवता-पक्षीय है। आइए हम अपने सतिगुरुओं की वाणी का प्रात:-सायं पाठ करें और अपने बच्चों को भी इस वाणी का पाठ सुनाएँ, उन्हें इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करें-तभी मधुप-मखीरा सिद्धांत और बेग़मपुरा बसाने का संकल्प पूर्ण होगा। जय गुरुदेव ! धन्य गुरुदेव !

संत प्रभु प्रसाद, मंडुआ डीह, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)।

महान इन्कलाबी और मानवतावादी : गुरु रविदास जी

डॉ. जी.सी. कौल, एम.ए., पी.एच.डी., मो. +919463223223

1. मध्यकालीन युग में दलित क्रांति के अग्रदूत, स्त्री वर्ग को समान अधिकारों की राह दिखाने वाले तथा बनारस के प्रमुख पंडितों से 'दंडवत् वंदना' करवाने वाले संत सतिगुरु रविदास जी ऐसे मानवतावादी जननायक थे, जिन्होंने न केवल अछूतों के लिए, बल्कि विद्वान पंडितों और राजा-रानियों के लिए भी एक महान दार्शनिक के रूप में तत्कालीन समाज में अपनी पहचान बनाई। उस समय दलदल बन चुकी भारत-भूमि के हृदय पर वे कमल के फूल की भाँति खिल उठे और जाति-पाँति, छूत-अछूत, ऊँच-नीच, आपसी वैर-विरोध, धार्मिक घृणाओं, दुराचारी शासकों तथा धर्म के तथाकथित ठेकेदारों द्वारा फैलाए गए भ्रम-जाल, अंधविश्वास और कर्मकांड से प्रदूषित हो चुके परिवेश को अपने दर्शन के प्रकाश और कीर्ति की सुगंध के माध्यम से आलोकित, उज्ज्वल और सुवासित किया।

2. गुरु रविदास जी का तेजस्वी व्यक्तित्व सदियों से पीड़ित, प्राणशक्ति से वंचित हो चुके जन-साधारण के लिए आशा का एक नया संदेश लेकर आया। यह ऐसा संदेश था, जिसने भविष्य में रूढ़िवादी समाज द्वारा जकड़ी गई जंज़ीरों को तोड़कर समता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व पर आधारित एक नए समाज की रचना का मार्ग प्रशस्त किया। भगवान बुद्ध के सदियों बाद भारत के पीड़ित, दबे-कुचले, पद-दलित और उपेक्षित लोगों को गुरु रविदास जी के रूप में अपना ऐसा मार्गदर्शक मिला, जो उनके दु:खों, दर्दों और पीड़ाओं की वास्तविकता को न केवल गहराई से समझता था, बल्कि उसने स्वयं अपने जीवन में इन पीड़ाओं को सहन भी किया।

3. अछूत वर्ग में जन्म लेकर उच्च वर्गों के लिए भी प्रकाश-स्तंभ बनने वाले इस महान क्रांतिकारी मार्गदर्शक ने अपनी वाणी के माध्यम से इस धरती पर समाजवादी लोकतंत्र की संकल्पना प्रस्तुत की और गरीबों, मजदूरों तथा किसानों की लूटी जा रही मेहनत के विरुद्ध जन-चेतना जागृत की। आपने अपने अनुभव, आध्यात्मिक ज्ञान और कल्याणकारी जीवन के द्वारा अंधविश्वासों, वहम-भ्रमों, जंतर-मंतर, तीर्थ, व्रत, योग-विधियों, मूर्ति-पूजा, जनेऊ, दीप, अर्चना तथा ऊँच-नीच और जाति-पाँति के कीचड़ में फँसी हुई भारतीय जनता को जीवन जीने की क्रांतिकारी दिशा प्रदान की। पाखंडी पुरोहितों और कट्टर रूढ़िवादियों को सत्य के मार्ग पर ले जाने का आपका तरीका अत्यंत तर्कसंगत और अनोखा था।

पुरोहितवादी पाखंड को ललकारने और अछूतों के समान अधिकारों को प्रतिपादित करने के लिए आपने बचपन में ही वे कार्य करने आरंभ कर दिए, जिन्हें श्रुतियों, स्मृतियों और तथाकथित धार्मिक ग्रंथों के अनुसार केवल तथाकथित उच्च जातियों के लोग ही कर सकते थे। आपने बुलंद स्वर में कहा-

'आपन बापै नाही किसी को, भावन को हरि राजा।।'

(आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 658)

अर्थात् परमात्मा किसी के पिता की जागीर नहीं है; जो भी प्राणी प्रेम-भाव से युक्त है, वह उसकी पूजा-भक्ति कर सकता है। आपने डंके की चोट पर कहा कि कर्मकांड में फँसे, अहंकार-ग्रस्त पाखंडी पुरोहित पागलों अर्थात् बावलों की तरह भटकते हुए स्वयं को बड़े कवि, कुलीन, पंडित अथवा विद्वान, योगी, संन्यासी, ऋषि, मुनि, बहादुर, शूरवीर और दानी-दाते समझे बैठे हैं–

हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥
गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥२ ॥
कहु रविदास सभै नही समझसि भूल परे जैसे बउरे ॥....

(आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 973)

4. क्रांतिकारी मार्गदर्शक द्वारा पंडितों और पुरोहितों जैसे कर्मकांडों का निर्वाह करना तथा उन सा पाखंडी वेश धारण करना, वास्तव में उन लोगों पर करारा प्रहार था जिन्होंने धर्म को एक 'वंशानुगत पेशा' बना दिया था। यह एक खुली चुनौती थी, एक ललकार थी और भारत के आकाश में तथाकथित धर्म के नाम पर लहराए जा रहे झूठे झंडे को चीर-फाड़ कर गिराने हेतु विद्रोहात्मक ढंग से उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम था। धर्म में प्रचलित आरती को आपने '**झूठे सगल पासारे**' कहकर केवल एक दिखावा घोषित किया। मूर्ति-पूजकों द्वारा तथाकथित देव-पूजा के समय शुद्ध जल, फल और दूध आदि को नदियों, नालों और पहाड़ों से एकत्र कर तराशे गए पत्थरों को स्नान कराना तथा ठाकुरों को भोग अर्पित करने की परंपरा को आपने रूढ़िवादी आडंबर और कर्मकांडीय पाखंड बताया। आपने दृढ़ता से कहा कि पत्थर के निर्जीव खंडों को भोग लगाने के लिए चढ़ाया गया दूध, फूल और जल तो पहले ही क्रमश: बछड़े, भौंरे और मछली द्वारा जूठा किया जा चुका है, फिर ऐसी जूठी सामग्री से की गई पूजा पवित्र कैसे हो सकती है? आपका स्पष्ट आदेश है–

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ।।१ ।।
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ।। **(आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 525)**

5. गुरु रविदास जी ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष का ध्वज बुलंद किया। आपने तथाकथित निम्न वर्ग में आत्म-विश्वास, आत्म-शक्ति और आत्म-सम्मान जाग्रत कर उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कथित कुलीन वर्ग के समकक्ष खड़ा किया आपने 'पराधीनता पाप है' का उद्घोष करते हुए दासता के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा दी और सामाजिक तथा आर्थिक समानता पर आधारित एक सहभागी और मानवीय समाज की रचना का विचार प्रस्तुत किया।

6. आपकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। आर्थिक समृद्धि के लिए निरंतर सुकृत से जुड़े रहना, अविद्या तथा अज्ञानता से मुक्ति हेतु विवेक रूपी दीपक की मलिनता को विद्या के प्रकाश से प्रज्वलित करना, नशों के सेवन से परहेज करना, सादा जीवन-व्यवहार अपनाना तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति-अर्थात् पराए दु:ख को बाँटने की भावना-मानवीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की क्षमता रखती है।

जन-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत, वेदना से परिपूर्ण हृदय परायों के प्रति भी अकथनीय, असहनीय और अथाह पीड़ा का अनुभव करता है। संवेदनशील और करुणामय हृदय में ही पराई पीड़ा का सच्चा बोध संभव होता है। गुरुजी का कथन है–

सो कत जानै पीर पराई ॥
जा कै अंतरि दरदु न पाई ।।१ ।। **(आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 793)**

7. '**बेगमपुरा सहर कौ नाउं**' शब्द में गुरु रविदास जी ने रहस्यमय पारलौकिकता को जन-कल्याण के हित में लौकिकता में परिवर्तित करने का ऐतिहासिक कार्य किया है। उनका यह शब्द अर्थ-व्यवस्था का एक विचारणीय मॉडल है। किंतु भौतिकवादी रुचियों तथा आधुनिक युग की वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रभाव में हम अपने महान संत-सतगुरुओं की विचारधारा से व्यवहारिक रूप में बहुत तेज़ी से दूर होते जा रहे हैं। यदि हम आत्म-निरीक्षण करें और अपने परिवेश पर दृष्टि डालें, तो आज की और मध्यकालीन परिस्थितियों में अधिक परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता। आज का तथाकथित स्वतंत्र और स्वाधीन मनुष्य अभी भी सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक जकड़नों, प्रतिबंधों और राज्य सत्ता का बंदी, गुलाम और पराधीन बना हुआ है। आज भी जातियों, रंगों, नस्लों, समुदायों और व्यवसायों के भेदभाव किसी न किसी परिवर्तित रूप में विद्यमान हैं।

8. आज रूढ़िवाद हर मनुष्य, जाति, कौम, मज़हब और नस्ल में समा गया है। नशाखोरी, सत्कर्मों से विमुखता और अरुचि, दुर्व्यवहार, बेईमानी, अनियमितता, निर्लज्जता, निर्दयता, क्रूरता, अविश्वास, असंवेदनशीलता, लापरवाही, बेवफाई और बेलिहाज़ी-ये सभी आज के मनुष्य की विशेषताएँ बन गई हैं। गुरु रविदास जी के विश्व-भाईचारे के दर्शन को संकीर्ण दायरों में कैद किया जा रहा है। लोभ, लालच, तृष्णा और स्वार्थी प्रवृत्तियों के अधीन गुरु जी की व्यावहारिक विचारधारा को तिलांजलि देकर, जिस रूढ़िवादी कर्मकांड, आडंबर और पाखंड का उन्होंने खंडन किया था, मठाधीशों ने उसे ही पूर्ण रूप से अपना लिया है।

9. वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रभाव में भौतिकवादी बनता जा रहा आज का मनुष्य गंभीर रूप से नैतिक पतन का शिकार हो रहा है। नशाखोरी, चरित्रहीनता, असहिष्णुता, दूसरों के प्रति असंवेदनशीलता, अमानवीय व्यवहार, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद तथा रातों-रात अमीर और शक्तिशाली बनने की लालसा ने सामाजिक और मानवीय मूल्यों पर गहरा आघात किया है। श्री गुरु रविदास जी ने ऐसे लोगों को अपनी वाणी में '**माटी को पुतरा कैसे नचत है**' और श्री गुरु नानक देव जी ने– '**राजे सीह मुकदम कुत्ते ॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥**' कहकर संबोधित किया है।

संत-सतिगुरुओं की वाणी और विचारधारा को केवल पढ़ने-पढ़ाने तक सीमित कर देना तथा अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करने की होड़ में जकड़ा हुआ आज का मानव, तभी अपने आचरण और व्यवहार में महापुरुषों की सदा नवीन और विनम्र विचारधारा को व्यावहारिक रूप से अपनाकर विश्व-शांति और समानता-आधारित विश्व-भाईचारे की स्थापना करने में समर्थ हो सकता है। यही सामर्थ्य वर्तमान युग की स्थायी और प्रमुख आवश्यकता है। इस संदर्भ में गुरु रविदास जी की प्रभावशाली, मानवतावादी वाणी और व्यक्तित्व सदियों तक भटके हुए जीवों को मार्गदर्शन देती रहेगी।

श्री गुरु रविदास जी की भारत यात्राएँ

रूप लाल रूप, ज़िला शिक्षा अफ़सर (रिटा.), मो. +94652-29722, 94652-25722

1. गुरु रविदास आश्रम सिरसई (गुजरात)

गुरु रविदास महाराज जी लोक कल्याण हेतु अपनी पहली यात्रा के समय सिरसई (गुजरात) में 1436 ई. में पधारे। 'संत रोहीदास आश्रम' के नाम से जाने जाते इस पावन स्थल पर प्रबंधकों द्वारा गुरु साहिब की आमद ग्रेनाइट के पत्थर पर उकेरी हुई है। यह अस्थान जूनागढ़ से 40 किलोमीटर की दूरी पर सुशोभित है। गुरु साहिब ने लोगों की सुविधा हेतु यहां शाल कुण्ड, हिमाल कुण्ड, चर्म कुण्ड, हाड़गड़ो कुण्ड, स्नानाघाट कुण्ड, अमर कुण्ड तथा शिवघाट कुण्ड प्रकट किये। इनमें से पहले तीन बरकरार हैं और बाकी के कुण्ड आलोप हो चुके हैं। स्थानीय दंत-कथा के अनुसार यहां का राजा कंकण परिवार सहित गुरु जी का चरण सेवक बन गया था। यह स्थान गुरु जी की गतिविधियों का 12 साल तक केन्द्र रहा। यहां से उन्होंने गुजरात के प्रमुख शहरों की यात्रा करके द्वारका के मार्ग से चंदका, कंधकोट, मुल्तान, जलालाबाद, अबादन, बगदाद आदि तक लोगों को एक ईश्वरवाद का संदेश दिया। वह जगह-जगह श्रम और कर्म के रूप में सचियार होने का संदेश देते हुए वापिस सिरसई आश्रम आ गये।

2. छत्र मेले में गुरु रविदास जी का ऐतिहासिक उपदेश

गुरु रविदास जी पूर्व देश की यात्रा के समय 1460 ई. में गंगा और गंडक नदी के संगम पर लगते 'छत्र मेला', जो एक महीना चलता है, में उपदेश करने सोनपुर (बिहार) पहुंचे। इस मेले में हाथी, घोड़ों के अलावा सुंदर महिलाओं की खरीदो-फरोख्त भी होती थी। इतिहास में दर्ज है कि 'छत्र मेला' में चंद्रगुप्त मौर्य, अकबर, औरंगज़ेब आदि जैसे बादशाह हाथी, घोड़े खरीदते रहे हैं। गुरु रविदास जी ने यहां एक महीना रह कर पारब्रह्म का यश-गायन किया और दूर-दूर से आती संगतों को औरत जाति के सम्मान का ऐतिहासिक उपदेश दिया। उनकी इस फेरी के उपरांत व्यापारियों ने औरतों की खरीदो-फरोख्त से मुंह मोड़ लिया था। यह मेला आज भी धूम-धाम से मनाया जाता है, लेकिन गुरु साहिब द्वारा औरतों के सम्मान हेतु डाले पद चिन्हों का आज भी सत्कार होता है।

3. गुरु रविदास जी का आरती उच्चारण स्थान जगन्नाथ पुरी

उड़ीसा प्रांत में समुद्र के किनारे, दिल्ली से 1818 कि.मी. दूर पुरी शहर स्थित है। हिंदुओं के चार पावन धामों में से 'जगन्नाथ धाम' वहीं सुशोभित है। गुरु रविदास जी 1462 ई. में पुरी गये। यहां जगन्नाथ धाम में शूद्रों का प्रवेश वर्जित था। इस लिए गुरु साहिब को मंदिर के दर्शन करने की आज्ञा नहीं मिली। उन्हें मंदिर से 500 मीटर की दूरी पर बैठने को कहा गया। गुरु साहिब ने मौजूदा बड़ी मोचीशाही शूद्र बस्ती के पास समुंदर के रेतीले तट पर अपनी भजन मंडली सहित आसन लगा लिया। उन्होंने वजद (मस्ती) में आ कर **'नाम तेरो आरती मजनु मुरारे'** आरती का गायन किया तो मानो समय वहीं पर थम गया। समुद्र किनारे टहलते हज़ारों लोक चांद चकोर की तरह उनके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये। यहां के भीलों की उन्होंने वेदना सुनी और उनको निर्भय होकर पारब्रह्म की

बंदगी करने का उपदेश दिया।

4. गुरु रविदास कुटिया मांडो (मध्य प्रदेश)

गुरु रविदास महाराज जी जगह-जगह संगतों को उपदेश देते, सुल्तान ग्यास शाह की हकूमत के समय, 1476 ई. में मांडो पहुंच गये जो उस समय उच्च कोटि के उलमा और सूफी संतों के पक्के आवास के कारण नैतिक मूल्यों का केंद्र बना हुआ था। सूफी संतों के साथ गोष्टि के उपरांत गुरु साहिब ने मांडो से चार कि.मी. दूर मेंदी खेड़ी गांव के पास काकड़ा खो (खड्ड) के किनारे एक सुन्दर एकांत जगह पर अपनी भजन मंडली सहित डेरा लगा लिया। इस स्थान पर उन्होंने लोगों की सुविधा हेतु पानी का चश्मा प्रकट किया जो निरंतर बह रहा है। लोग सम्मान सहित आज भी चश्मे का जल पी कर गुरु साहिब की जै-जैकार करते हैं। इसी स्थान पर उनकी अनिंद्या श्रद्धालु कुमारी गंगा ने अपनी इज्जत की रक्षा हेतु काकड़ा खो में छलांग लगा कर जान दे दी थी, जिस से सुल्तान ग्यास शाह जबरन शादी करना चाहता था और शाही बारात कुमारी गंगा को बचाती काकड़ा खो में बह गई थी। सुल्तान अपने कुकर्मों का पछतावा करते हुए गुरु रविदास जी का चरण सेवक बन गया था।

5. उज्जैन में गुरु रविदास गद्दी

उज्जैन हिंदुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान दिल्ली से 780 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। प्राचीन काल में भारतीय समय की गणना का यह केन्द्र बिन्दु रहा है। हिंदुओं के बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक महाकालेश्वर मंदिर यहां शोभायमान है। माना जाता है कि इस मंदिर के दर्शन करने से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इसी कारण यहां पुजारियों के कर्मकांडों का बोलबाला था। गुरु रविदास जी जन-साधारण को कर्मकांडों के प्रति जागरूक करने और सतनाम का संदेश देने हेतु दक्षिण देश की यात्रा से वापसी के समय 1476ई. को यहां पधारे। सिप्रा नदी के किनारे जिस स्थान पर उन्होंने स्नान किया वह रविदास घाट के नाम से जाना जाता है। उनके आने को मूर्तिमान करता यहां छोटा-सा मंदिर बना हुआ है। मंदिर का पुजारी पंडित है, जो गुरु साहिब की बाणी की जगह संस्कृत के श्लोकों का उच्चारण करके मूल निवासी लोगों से पूजा अर्चना करवाता है। रविदास घाट से गुरु साहिब थोड़ी दूरी पर मौजूदा भेरू नाला के पास संत गोवर्धन दास, मूल निवासी आध्यात्मिक मुखिया के आश्रम गये। यहां साधारण मंदिर में गुरु रविदास जी और संत गोवर्धन दास जी की दो गद्दियां सुशोभित हैं। गुरु साहिब की गद्दी सम्मान स्वरूप ऊंची रखी गई है।

6. ऐलौरा में गुरु रविदास तालाब

चोटी के कई विद्वानों द्वारा हैदराबाद में ऐलोरा के स्थान पर बताया जाता तालाब असल में औरंगाबाद से 32 कि.मी. दूर एलौरा की गुफाओं के पास स्थित है, जो प्राचीन हैदराबाद रियासत का हिस्सा रहा है। स्थानीय रविदासिया लोगों की दंत-कथा के अनुसार इस इलाके के राजा येलदेओ के बदन में कीड़े पड़े हुए थे। गुरु साहिब ने उसकी पीड़ा सुन कर अपने आसन के नज़दीक गड्ढा खोद कर नज़दीक बहती येलगंगा का पानी मंगवा कर इस में डाल दिया। बादशाह उस में डुबकी लगा कर चमड़ी रोग से स्वस्थ हो गया। उस ने प्रसन्न हो कर उस गड्ढे को तालाब का रूप दे दिया। पर अब सब कुछ हिन्दूमय हो चुका है। तालाब के साथ हिंदूवादी कथाएं जोड़ दी गई हैं।

इंदौर की रानी अहिल्याबाई होलकर ने 18वीं शताब्दी में इस तालाब का नव-निर्माण करवाया और इस का नाम 'पुण्यश्लोक अहिल्याबाई तीर्थ कुण्ड' रख दिया। इस की 41 सीढ़ियां हैं। सीढ़ीयों पर छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं। एक मंदिर कुण्ड के मध्य में है। पुजारियों द्वारा कर्मकांडों सहित यात्रियों को स्नान करवाया जाता है। इतना कुछ होते हुए भी लोक स्मृतियों में यह रविदास कुण्ड के रूप में वसा हुआ है।

7. गुरु रविदास जी की चूहड़काणा फेरी

अपनी पहली पंजाब यात्रा के समय गुरु रविदास महाराज जी गांव डंडा (अमृतसर) से होते हुए 1482 ई. में चूहड़काणा मंडी के पास सांदल बार के जंगल में, संत मंडलियों के लिए बनी आलौकिक ठहराव में पहुंच गये। इस संत-मंडली के प्रमुख संतों में सतगुरु कबीर जी, सतगुरु पीपा जी और संत साईं दास जी शामिल थे। इस स्थान पर संत-मंडलियों का आना-जाना बना रहता था। स्थानीय लोग संतों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करते और उनके प्रवचन सुनने का लाभ लेते थे। इसी स्थान पर गुरु नानक देव जी ने संत मंडली की इलाही ज्योति को पहचाना और उन पैसों का उन्हें भोजन करवा दिया जो पिता कालू राम जी ने उनको 'खरा सौदा' करने हेतु दिये थे। यह घटना सिख इतिहास में 'सच्चा सौदा' के नाम से प्रसिद्ध है। सिख विद्वान संत मंडली के मुखिया का नाम संत रेण लिखते हैं। इतिहास के पन्ने तलाशें तो गुरु नानक देव जी के समकाली किसी संत रेण का ज़िक्र नहीं मिलता। जिस संत रेण का ज़िक्र इतिहास में दर्ज है उसका देहांत 1930 ई. में हुआ। इस लिए हमारी खोज अनुसार उस संत-मंडली के मुखिया गुरु रविदास जी थे।

8. गुरु रविदास मंदिर तुगलकाबाद

बादशाह सिकंदर लोधी चर्मरोग से पीड़ित था। शाही हकीमों का उपचार नाकाम रहने पर उसने दवा की बजाए दुआ का सहारा लेने की इच्छा व्यक्त की। उसके सलाहकारों ने मश्वरा दिया कि गुरु रविदास जी ने बारूल के राजा येलदेओ को चर्म रोग से तंदरुस्त किया सुना है। बादशाह के फरमान अनुसार गुरु साहिब को अगस्त, 1493 ई. में बड़े सत्कार से बनारस से दिल्ली लाया गया। बादशाह की प्रार्थना सुन कर उन्होंने उसको तंदुरुस्त होने का आशीर्वाद दिया और तुगलकाबाद के जौहड़ (तालाब) के पास समाधि में लीन हो गये। समाधि से जागृत अवस्था में आने पर बादशाह को जौहड़ में स्नान करने हेतु संदेश भेजा गया। तालाब, जो बाद में 'चमारवाड़ा जौहड़' नाम से प्रसिद्ध हुआ, में स्नान के उपरांत वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया। उसने खुश हो कर गुरु साहिब को 700 बीघा की जागीर अलाट की। इस स्थान पर निर्मित मंदिर में गुरु रविदास जी के चरण सेवक सदियों से पूजा-अर्चना करते आ रहे थे। पर 10.08.2019 को सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार डी.डी.ए. द्वारा 700 वीघा ज़मीन सरकारी बता कर मंदिर को गिरा दिया गया। समाज के तीव्र विरोध के सम्मुख सुप्रीम कोर्ट ने 400 वर्ग मीटर जगह मंदिर हेतु देने का फैसला 20.10.2019 को सुना दिया। पर मंदिर का निर्माण अभी कई विभागीय अड़चनों के कारण नहीं हो सका।

गुरु रविदास जी का 650वां प्रकाश पर्व 1 फरवरी 2026 से 20 फरवरी 2027 तक श्रद्धापूर्वक मनाया जा रहा है।
आइए इस पावन अवसर पर गुरु जी की वाणी और विचारधारा को अपने जीवन में अपनाएं और ओरों को प्रेरित करें।

गुरु रविदास महाराज जी का पंजाब में प्रथम पदार्पण

रूप लाल रूप, ग्राम भेलां, डाकखाना नाजका, ज़िला जालंधर (पंजाब), मो. 94652-25722

गुरु रविदास महाराज जी का हदियाबाद में पड़ाव - 1

सन् 1481 में कार्तिक मास के दौरान पाँच नदियों की धरती पंजाब पर गुरु रविदास महाराज जी ने अपना प्रथम चरण रखा। उनकी पावन आगमन से इस पवित्र भूमि पर छाए कर्मकांडों के बादल छँट गए। पंजाब में मानो प्रभात बेला हो गई। गुरु रविदास महाराज जी के अलौकिक प्रकाश तथा प्रवचनों को सुनकर समस्त जनमानस ऊर्जावान हो उठा।

लुधियाना से फिल्लौर होते हुए गुरु रविदास महाराज जी हदियाबाद पहुँचे। उस समय हदियाबाद एक प्राचीन नगर था, जो लुधियाना-जालंधर मार्ग पर स्थित था। फगवाड़ा तब तक 'फग्गू का वाड़ा' ही कहलाता था। गुरु जी की संत मंडली में सतगुरु कबीर, सतगुरु पीपा, संत साईं दास तथा अन्य शिष्य-जीवन दास, गुरमुख दास, अनमोल राय आदि सम्मिलित थे। गुरु जी ने यहाँ कुछ दिन विश्राम किया और संगतों को 'मधुप मखीरे' का उपदेश दिया। उनकी इस यात्रा को महात्मा हीरा दास जी ने अपनी पसंद की भूमि पर मंदिर का निर्माण कर मूर्त रूप प्रदान किया।

श्री रविदास दीप ग्रंथ में वे लिखते हैं–

बहु देशों का सैल कर, मन में किया विचार।
सर्ब कला समर्थ गुर, तां का नहीं दरबार॥
श्रद्धा हीन सु लोक हैं, नाहिं कहूं अधिकार।
हीरा दास गुर इष्ट को, रचहूं मैं दरबार॥

ग्राम चक्क हकीम के समीप, जी.टी. रोड के उत्तर दिशा में स्थित यह दरबार महात्मा हीरा दास जी द्वारा स्थापित किया गया है, जो गुरु रविदास महाराज जी की प्रथम पंजाब यात्रा की स्मृति को संजोए हुए है। इसकी स्थापना संवत 1945 विक्रमी में की गई थी। इस मंदिर में '**श्री रविदास दीप ग्रंथ**' का प्रकाश है। मंदिर की आंतरिक दीवारों पर बने चित्र उस समय की उत्कृष्ट कला के प्रतीक हैं। इन चित्रों में भगवान राम, सीता, हनुमान, रावण, भैरों जती, नारद आदि हिंदू देवी-देवताओं के साथ-साथ सिख गुरु साहिबानों के चित्र भी सुशोभित हैं, जो समकालीन समन्वयात्मक सोच का प्रतीक हैं। गुरु रविदास महाराज जी के मुख्य चित्र के ऊपर ब्रह्मा, विष्णु और महेश के चित्र अंकित हैं। सतगुरु कबीर जी को तानेपुर पर रक्ष (कपड़ा बुनने का काम) करते हुए दर्शाया गया है। महात्मा हीरा दास जी तथा उनके समकालीन संत-मौदर, श्रद्धा राम और ज्वाला दास-के चित्र भी दीवारों की शोभा बढ़ाते हैं। यहाँ छोटी ईंटों से बना एक प्राचीन कुआँ भी विद्यमान है, जिसे अत्यंत पुराना बताया जाता है। इस अस्थान की सेवा संभाल Sant Parshotam Dass Ji कर रहे हैं। उनका मोबाइल नं. +91-83600-88787 है।

इस मंदिर के पश्चिम दिशा में, जी.टी. रोड पर, गुरु रविदास महाराज जी की यात्रा को मूर्त रूप देने वाला '**संत शिरोमणि गुरु रविदास मंदिर**' निर्माणाधीन है। इस विशाल मंदिर का निर्माण गुरु

रविदास महाराज जी की समस्त संगतों के सहयोग से किया जा रहा है। यहाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश है। देश-विदेश से श्रद्धालु इस मंदिर के दर्शन हेतु आते हैं। यह स्थल संगतों की आस्था का प्रमुख केंद्र बन चुका है।

गुरु रविदास महाराज जी की ग्राम डंडे की यात्रा - 2

गुरु रविदास महाराज जी के आगमन से आशा की नई किरण जाग उठी। लंबे समय बाद पंजाब की धरती पुनः आलोकित हुई। अलौकिक संत मंडली के दिव्य प्रवचनों को सुनकर समस्त मानव समाज को आध्यात्मिक शांति प्राप्त हुई। हृदयों से द्वेष के कण समाप्त हो गए और चारों दिशाओं में आपसी भाईचारे की सुगंध फैल गई। गुरु रविदास महाराज जी अपनी संत मंडली सहित विभिन्न स्थानों पर पड़ाव करते हुए जालंधर, जंडियाला, बंडाला होते हुए सन् 1481 के अंत में अटारी बॉर्डर के समीप ग्राम डंडा पहुँचे। यह गाँव अमृतसर से लगभग 26 किलोमीटर दूर स्थित है। गुरु जी के आगमन के समय अमृतसर नगर अस्तित्व में नहीं था; बहुत समय बाद इस नगर को गुरु रामदास जी ने बसाया। वर्तमान जी.टी. रोड पर स्थित गोल्डन गेट को पार कर, खालसा कॉलेज अमृतसर के सामने से होते हुए ग्राम डंडा पहुँचा जा सकता है। ग्राम डंडा के पश्चिम दिशा में घुमंतू संत मंडलियों के लिए एक रमणीय पड़ाव हुआ करता था। गुरु जी के आगमन से इस स्थान का सौभाग्य और बढ़ गया। संत मंडलियों का यहाँ निरंतर आवागमन होने लगा।

गुरु जी ने यहाँ कुछ दिन विश्राम किया और संगतों को हक्क, सच्च और सतनाम का उपदेश दिया। उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग को आगे संत मणि राम जी ने बढ़ाया। संत मणि राम जी की स्मृति में यहाँ निर्मित मंदिर आज भी उनकी साधना और सेवा की कथा कहता है। उनके पश्चात संत मान दास, संत हरि दास, संत तोता दास, संत चुप्प दास और संत ज्ञान दास आदि गुरु रविदास महाराज जी के मिशन के ध्वजवाहक बने।

इन पाँच पूर्ण संतों की समाधियाँ इस धर्मस्थल के प्रांगण में सुशोभित हैं। श्रद्धालुओं के लिए ये समाधियाँ गुरु रविदास महाराज जी की भक्ति और शक्ति का प्रतीक हैं। यहाँ साधु-संतों और संगतों के जलपान हेतु निर्मित एक प्राचीन कुआँ आज भी विद्यमान है। दूर-दूर से श्रद्धालु इस पावन स्थल के दर्शन के लिए आते हैं।

इस ऐतिहासिक स्थल पर गुरु जी की यात्रा को जीवंत रूप देने के लिए 'गुरु रविदास जन्म उत्सव कमेटी, दिल्ली' द्वारा स्थानीय संगतों के सहयोग से एक भव्य मंदिर की रूप-रेखा तैयार की गई है, जो वर्तमान में निर्माणाधीन है। अब इस पवित्र स्थल की सेवा-संभाल श्री गुरु रविदास नौजवान सेवक सभा, ग्राम डंडा अमृतसर द्वारा की जा रही है। संपर्क नं. +919592186561

गुरु रविदास महाराज जी की संत मंडली अपने मिशन की पूर्ति उपरांत यहाँ से अपनी अगली मंज़िल चूहड़काना की ओर प्रस्थान कर गई।

दूसरी पंजाब यात्रा

गुरु रविदास महाराज जी की खुरालगढ़ साहिब में फेरी - 3

गुरु रविदास मंदिर श्री खुरालगढ़ साहिब - ज़िला होशियारपुर के जनौड़ी गाँव से मंज़िल-दर-मंज़िल चलते हुए गुरु रविदास महाराज जी सन् 1499 ईस्वी में श्री खुरालगढ़ साहिब पहुँचते

हैं। यह पावन स्थान गढ़शंकर, ज़िला होशियारपुर से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर, रमणीय पहाड़ियों की गोद में स्थित है। श्री खुरालगढ़ साहिब के उत्तर-पूर्व में हिमाचल प्रदेश के मनोहारी पहाड़ सुंदर दृश्य प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार यह पंजाब का अंतिम गाँव है, जो हिमाचल प्रदेश से सटा हुआ है। इसे 'बीत' का इलाका भी कहा जाता है।

गुरु जी ने अपनी संत मंडली के साथ इस पावन स्थान पर कुछ दिन विश्राम किया। यहाँ अपने दिव्य प्रवचनों से उन्होंने जंगल में भी मंगल कर दिया। कर्मकांडों को निरर्थक कर्म बताते हुए उन्होंने समस्त मानवता को एक ईश्वर की भक्ति से जोड़ा। निर्भय और निर्वैर होकर अपने हाथों से परिश्रम करने का संदेश दिया।

गुरु रविदास महाराज जी के आगमन को साकार करता हुआ यहाँ एक विशाल गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। इस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पावन प्रकाश है। देश-विदेश से संगतें यहाँ आकर नतमस्तक होती हैं और गुरु जी की कृपाएँ प्राप्त करती हैं। गुरु रविदास जी की दैवी शक्ति से खुरास (चक्की) के अपने आप चलने की कथा भी इस स्थान से जुड़ी हुई है। आने वाली संगतों के लिए यहाँ रात्रि-विश्राम तथा लंगर की विशेष व्यवस्था है। वर्तमान समय में इस स्थान की सेवा-संभाल भाई केवल सिंह जी के नेतृत्व में चल रही है। उनका मोबाइल नंबर +91 94175 40489 है।

गुरु रविदास यादगार मीनरा-ए-बेग़मपुरा - गुरु रविदास महाराज जी के दर्शन और दर्शन-दर्शन को आगे बढ़ाने के लिए पंजाब सरकार द्वारा इस गुरुद्वारा साहिब से लगभग 200 मीटर की दूरी पर 'मीनार-ए-बेग़मपुरा' श्री गुरु रविदास जी की स्मारक निर्माणाधीन है। गुरु जी के जीवन की झलकियाँ दर्शाने वाला यह एक अद्भुत स्मारक होगा। यह स्थान बेग़मपुरा की स्थापना के लिए एक मील का पत्थर सिद्ध होगा और आने वाली पीढ़ियों को सदियों तक मार्गदर्शन देता रहेगा।

श्री चरण छोह गंगा अमृत कुंड - श्री खुरालगढ़ साहिब से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर श्री गुरु रविदास ऐतिहासिक धर्म स्थान श्री चरण छोह गंगा, अमृत कुंड, सचखंड स्थित है। यह स्थान ऊँची पहाड़ी से काफी नीचे सुशोभित है। यहाँ विशाल हाल में गुरु रविदास महाराज जी की सुंदर मूर्ति विराजमान है। इस हाल में गुरु जी की वाणी और दर्शन-दर्शन पर प्रतिदिन कथा-विचार होते हैं। प्रतिदिन बड़ी संख्या में संगतें इस स्थान के दर्शन-दीदार के लिए आती हैं। आने वाली संगतों के लिए यहाँ लंगर और निवास की विशेष व्यवस्था है।

यहीं गुरु जी द्वारा लोगों की सुविधा के लिए जल का स्रोत प्रकट किया गया बताया जाता है। इस स्रोत को भव्य सरोवर का रूप दे दिया गया है, जिसमें पवित्र जल का स्रोत आज भी प्रवाहित हो रहा है। इस स्रोत का पवित्र जल संगतें श्रद्धापूर्वक अपने घर ले जाती हैं। संगतों का विश्वास है कि इससे सुखों की प्राप्ति होती है। इस स्थान की सेवा-संभाल ऑल इंडिया आदि धर्म मिशन द्वारा की जाती है। वर्तमान समय में इस स्थान की सेवा-संभाल संत सुरिंदर दास जी के नेतृत्व में चल रही है, जिनका मोबाइल नंबर +919417057352 है। श्री गुरु रविदास महाराज जी के जीवन-दर्शन से संगतों को जोड़ने में यह स्थान महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

गुरु रविदास जी का बेग़मपुरा : भय, दु:ख और भेदभाव से रहित समाज के स्वप्न की संकल्पना

प्रेम कुमार चुम्बर, संपादक : देश दूआबा (पंजाबी समाचार पत्र)
Ambedkar Times (English Newspaper) www.ambedkartimes.com, Mobile: 001-916-947-8920

श्री गुरु रविदास जी महाराज का 649वाँ आगमन पर्व आज पूरे विश्व में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाया जा रहा है। गुरु रविदास जी उत्तर भारत के मध्यकालीन भक्ति और क्रांतिकारी आंदोलन के एक महान शिरोमणि संत, गुरु, सतगुरु तथा मार्गदर्शक थे। वे भारत की उस जाति से संबंधित थे, जिसे समाज में निम्न कही जाने वाली चमार जाति के नाम से जाना जाता है। तथाकथित उच्च जातियाँ, जो स्वयं को 'स्वर्ण' कहती थीं, इस जाति तथा इससे जुड़े व्यक्तियों के स्पर्श मात्र से ही अपने आपको अपवित्र मानती थीं। गुरु रविदास जी ने छुआछूत की अन्यायपूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध सीधे और दृढ़तापूर्वक प्रहार किया। उन्होंने परमात्मा तक पहुँचने के लिए ब्राह्मणवादी मध्यस्थता की परंपरा को पूर्णत: अस्वीकार कर दिया। गुरु जी का स्पष्ट मत था कि प्रभु तक पहुँचने के लिए किसी मनुष्य को न तो अपनी जाति छिपाने की आवश्यकता है और न ही अपने तथाकथित निम्न कहे जाने वाले पेशे को त्यागने की। उन्होंने ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था की पदानुक्रम से उत्पन्न बाधाओं को ध्वस्त कर 'बेगमपुरा'–अर्थात भय, दु:ख और अत्याचार से मुक्त, समानता-आधारित राज्य–की संकल्पना प्रस्तुत कर विश्व के महान मार्गदर्शक का स्थान प्राप्त किया। गुरु रविदास जी ने ईमानदार श्रम को सशक्तिकरण का स्रोत बताते हुए श्रम के सम्मान को उच्च स्थान प्रदान किया। उन्होंने दान, कृपा अथवा चमत्कारी तरीकों से प्राप्त संपत्ति पर निर्भर रहने की धारणा को स्पष्ट रूप से अस्वीकार किया।

एक औपचारिक रूप से आयोजित शास्त्रार्थ में काशी के प्रसिद्ध पंडितों को पराजित कर गुरु रविदास जी ने यह सिद्ध कर दिया कि योग्यता और ज्ञान किसी तथाकथित उच्च जाति की बपौती नहीं हैं। प्रत्येक मनुष्य परमात्मा का स्मरण करने में सक्षम है। हिंदू समाज की चार-वर्णीय व्यवस्था एक बड़ा भ्रम है, जिसके आधार पर भारतीय समाज के एक बड़े वर्ग को तथाकथित ब्राह्मणों द्वारा गढ़े गए 'शुद्धता-अशुद्धता' के सिद्धांत के नाम पर मानसिक और शारीरिक दासता में जकड़ कर रखा गया। इसी अन्यायपूर्ण और धर्म के नाम पर थोपे गए सामाजिक विभाजन की व्यवस्था के विरुद्ध गुरु रविदास जी ने ऐसे समाज और राज्य की कल्पना की, जहाँ छुआछूत, अत्याचार और भेदभाव के लिए कोई स्थान न हो।

सामाजिक परिवर्तन को व्यवहारिक रूप देने के लिए गुरु रविदास जी ने मानव जीवन के मूल मूल्यों–श्रम, करुणा, सदाचार, नैतिकता तथा शराब जैसी नशीली वस्तुओं से दूर रहने–पर विशेष बल दिया। उन्होंने मनुष्य को हर प्रकार के दुष्कर्मों से बचते हुए सत्य, ईमानदारी और सादगीपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी। इसके साथ ही उन्होंने निराकार परमात्मा के स्मरण की तात्कालिक और अत्यावश्यक ज़रूरत को रेखांकित किया, जिसे वे विभिन्न नामों से संबोधित करते थे, किंतु जिसका स्वरूप एक ही था।

गुरु रविदास जी ने अपने समय की ब्राह्मणवादी, कर्मकांडी और मानवता-विरोधी सामाजिक

व्यवस्था के विरुद्ध निर्भय होकर आवाज़ उठाई। उन्होंने सदियों से पीड़ित और दबे-कुचले वर्गों को संगठित कर उनमें आत्म-गौरव, चेतना और अधिकारों की भावना का संचार किया। सत्य के पक्ष में निर्भय और निर्वैर होकर दृढ़ता से खड़े रहने का ही परिणाम था कि न केवल भारत में, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में 'बेगमपुरा'–अर्थात भय, दु:ख, छुआछूत तथा रंग-नस्ल और देश-प्रदेश की सीमाओं से ऊपर उठकर, भेदभाव-मुक्त सामुदायिक भाईचारे पर आधारित समाज की स्थापना का ध्वज बुलंद हुआ। गुरु रविदास जी द्वारा प्रस्तुत बेगमपुरा की संकल्पना साझेदारी, समानता और स्वतंत्रता पर आधारित है। यह संकल्पना केवल एक काल्पनिक राज्य नहीं, बल्कि मानवता के लिए एक आचरणात्मक मार्गदर्शन है, जो आज भी विश्व भर में सामाजिक न्याय, मानवाधिकारों और समानता के संघर्ष के लिए एक प्रकाश-स्तंभ बनकर मार्ग दिखा रहा है।

तन सुगंध ढूंढे प्रदेश

चरनजीत सिंह बिनपालके

ज्ञान की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गुरु की आवश्यकता होती है। 'गुरु' शब्द संस्कृत भाषा से आया है, जिसका अर्थ है–अज्ञान के अंधकार को दूर करने वाला। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अनेक मार्गदर्शकों, उस्तादों, अध्यापकों तथा आज के दौर में कंप्यूटर, मोबाइल और इंटरनेट की आवश्यकता पड़ती है। परंतु आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक ज्ञान के लिए गुरु का चयन करना एक अत्यंत जटिल विषय बना दिया गया है। वास्तव में यह विषय जटिल था ही नहीं, बल्कि इसे जानबूझकर जटिल बनाया गया है।

यदि हम श्री गुरु रविदास जी के बसंत राग में उच्चारित पावन शब्द '**तुझहि सुझंता कछू नाहि**'

के केवल एक ही पद को समझ लें, तो इस भ्रम-जाल से मुक्त हो सकते हैं। किंतु इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए हम किस प्रकार उलझे हुए हैं–पहले इसी पर विचार करते है। आज के अत्याधुनिक युग में पूरा संसार एक गाँव की भांति हो गया है। संसार के किसी भी कोने में घटित घटना का हमें ऐसा अनुभव होता है मानो वह हमारे पड़ोस में ही हुई हो। फिर भी विज्ञान के इस अथाह प्रकाश में मनुष्य इतना अधिक अंधविश्वासी हो गया है कि उसकी कोई सीमा नहीं रही। अशिक्षित व्यक्ति से तो यह अपेक्षित है, किंतु पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी उससे कहीं आगे बढ़कर अंधविश्वास में लिप्त दिखाई देता है। ईश्वर की प्राप्ति, उसके दर्शन, जीवन को सुखी बनाने, मन्नतें मांगने या उन्हें उतारने के लिए आज भी लोग कठिन तीर्थ यात्राएँ कर रहे हैं। ज्योतिषियों, तांत्रिकों और पाखंडियों के चंगुल में लोग आज भी इस प्रकार फँस जाते हैं मानो वे पाषाण युग में जी रहे हों।

ये अंधविश्वासी लोग कौन हैं? ये वही लोग हैं जो परमात्मा में ज्ञान-विहीन श्रद्धा और विश्वास रखते हैं। जो प्रत्येक धार्मिक स्थल को उसका निवास तो मानते हैं, परंतु शायद प्रत्येक जीव में उसके वास को स्वीकार नहीं करते होंगे। जो धर्म की वास्तविकता को निकट से पढ़ते और समझते नहीं। जिनके मन में धर्म के प्रति भय और भ्रम होता है। जो रातों-रात अमीर बनने की लालसा रखते हैं। जो बिना परिश्रम किए सफलता और इच्छापूर्ति चाहते हैं।

जो लोग धार्मिक जीवन जीते हैं, धार्मिक कार्य करते हैं या धार्मिक नेतृत्व करते हैं–उनमें से कुछ को

वास्तविक धार्मिक ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वे आडंबर, पाखंड तथा लोक-प्रदर्शन से मुक्त हो जाते हैं। किंतु जो लोग धर्म को अपने मन की इच्छा के अनुसार अपनाते हैं, वे केवल अपने मन की तृप्ति ही करते हैं। कुछ लोग धर्म में रहते हुए भी उसे समझ नहीं पाते और वही कर्मकांड करते रहते हैं जो सामान्य जन करते हैं। कुछ धार्मिक कार्यकर्ताओं की श्रद्धा नकारात्मक हो जाती है, परंतु वे परंपरा निभाने, लोक-प्रदर्शन करने या केवल अपनी 'ड्यूटी' समझकर इन आडंबरों को जारी रखते हैं। क्योंकि यदि धार्मिक नेता और प्रचारक ही यह कर्मकांड न करें, तो सामान्य जनता कैसे करेगी?

हमें और हमारे बच्चों को अपने गुरुजनों और मार्गदर्शकों के ऐतिहासिक स्थलों के दर्शन अवश्य करने चाहिए–सरल तरीकों से और अपनी सामर्थ्य के अनुसार। किंतु हम देखते हैं कि कुछ लोग उन धार्मिक स्थलों की ओर सैकड़ों मील की पदयात्राएँ करते हैं, जिनका न तो उनके जीवन से और न ही उनके पूर्वजों के इतिहास से कोई संबंध होता है। वहां घंटों कतारों में खड़े रहते हैं–भीषण गर्मी, ठंड, धक्का-मुक्की और तनावपूर्ण वातावरण होता है।

सोचने की बात है कि क्या हमारे देश के प्रसिद्ध, धनवान, अधिकारी या शिक्षित लोग भी इसी प्रकार कई घंटों तक कतारों में खड़े होकर दर्शन करते हैं? नहीं। इसका यह अर्थ नहीं कि उन्हें ईश्वर का ज्ञान हो गया है, बल्कि वे यह भली-भांति जानते हैं कि ऐसे धार्मिक आडंबरों का कोई वास्तविक लाभ नहीं। किंतु समाज को उलझाए रखने के लिए कुछ लोग इन आडंबरों पर धन खर्च करते हैं। यहाँ प्रश्न उठता है कि कठन हालात में धार्मिक मुखियों व स्थानों के दर्शन करने का हमारा उद्देश्य क्या है? क्या यह उद्देश्य सार्थक है? वास्तव में, जब तक हम परमात्मा, गुरु, पीर या पैगंबर की विचारधारा और ज्ञान को पढ़ते, सुनते, समझते और जीवन में नहीं अपनाते, तब तक केवल उनके दर्शन का कोई लाभ नहीं। गुरबाणी का स्पष्ट आदेश है–

'सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ।।
डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे विचारु ।।'

अर्थात् संपूर्ण संसार सतिगुरु को देखता है, परंतु केवल देखने से मुक्ति नहीं मिलती, जब तक उसके शब्द (ज्ञान) पर विचार न किया जाए।

कुछ लोगों की श्रद्धा किसी विशेष धार्मिक स्थल या धार्मिक नेता से जुड़ी होती है, जिसे वे सर्वोच्च मान लेते हैं। यह जुड़ाव पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है और जिस से उनकी मानसिकता एक सीमित दायरे में बंध जाती है। गुरु रविदास जी के शब्दों में– **'कूपु भरिओ जैसे दादिरा, कछु देसु बिदेसु न बूझ।'** अर्थात् कुएँ का मेंढक, जिसे बाहर की दुनिया का ज्ञान नहीं। ऐसी मानसिकता से व्यक्ति की तृप्ति भले हो जाए, परंतु उसकी पीढ़ियाँ और समाज गुलामी की अवस्था में जीने का आदी बन जाता है।

आज ज्ञान चारों ओर उपलब्ध है। ज्ञान प्राप्ति के लिए कठिन यात्राएँ, कर्मकांड और आडंबरों में समय व धन नष्ट करने की आवश्यकता नहीं। हम अपने गुरुजनों की वाणी को सही रूप में पढ़कर और समझकर यह ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक और धार्मिक ज्ञान के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं।

तो फिर प्रश्न है–ज्ञान या ईश्वर-प्राप्ति का स्रोत कहाँ है? आएं इस चर्चा का समाधान गुरु रविदास जी के पावन वचनों से करते हैं। वे गुरु जी कस्तूरी मृग का उदाहरण देकर समझाते हैं–

'जैसे कुरंक नहीं पायो भेदु। तन सुगंध ढूंढे प्रदेश।
अप तन का जो करे बीचार। तिस नाही जमकंकरु करे खुआर।'

गुरु जी बताते हैं कि मृग जिस सुगंध की खोज में जंगल-जंगल भटकता है, वह सुगंध वास्तव में उसी की नाभि से निकलती है। किंतु अज्ञानवश वह उसे बाहर खोजता रहता है। उसी प्रकार मनुष्य भी ईश्वर या ज्ञान की खोज में भटक रहा है, जबकि उसका स्रोत उसके अपने हृदय में ही है। जो मनुष्य इस सत्य को समझ लेता है और गुरु के ज्ञान को अपना लेता है, वही अपने जीवन को व्यर्थ होने से बचा लेता है। गुरु रविदास जी की बाणी और विचारधारा अपनाकर अपने जीवन को सार्थिक करें।

ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण तथ्य

* श्री गुरु रविदास जी के गुरु केवल पारब्रह्म परमात्मा ही थे। कोई भी देहधारी धार्मिक नेता, कोई मूर्ति, कोई देवता, भगवान, ठाकुर अथवा कोई अन्य व्यक्ति गुरु रविदास जी के गुरु नहीं था।

* प्रत्येक कौम का अपना एक निश्चित रंग होता है, जिसके माध्यम से उसकी पहचान बनती है। गुरु रविदास नामलेवा समाज का रंग मजीठ है। इसलिए इस समाज के धार्मिक अवसरों–जैसे निशान साहिब का चोला, सिरोपाव, पटके, दुपट्टे–तथा सामाजिक संस्थाओं की गतिविधियों के समय, और सामाजिक रीति-रिवाजों–जैसे विवाह, जन्म-मरण एवं अन्य संस्कारों–के निर्वहन के दौरान प्रयुक्त किया जाने वाला रंग मजीठ ही होता है।

मजीठ का रंग स्थायी और अटल होता है। गुरु रविदास जी ने अपनी वाणी में इसकी तुलना परमात्मा के रंग से की है। मजीठ का रंग लाल-काला, लाखी अथवा गहरा मैरून होता है।

* श्री गुरु रविदास जी की वाणी एवं विचारधारा, जीवन-इतिहास, अन्य आदिवासी महापुरुषों की वाणी एवं विचारधारा, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी तथा आदिवासी मार्गदर्शकों के विषय में हिंदी, पंजाबी, अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी वेबसाइट www.begumpuramission.com अवश्य देखें।

* श्री गुरु रविदास जी का 650वाँ प्रकाश पर्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पावन पर्व 1 फरवरी 2026 से 20 फ़रवरी 2027 तक पूरे एक वर्ष श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाया जा रहा है। पूरा वर्ष यह प्रकाश पर्व हमें गुरु रविदास जी की वाणी, विचारधारा और जीवन-इतिहास के अनुरूप ही मनाना चाहिए।

यह जानने के लिए कि यह 650वाँ प्रकाश पर्व किस प्रकार मनाया जाए, वेबसाइट www.begumpuramission.com पर उपलब्ध "650 years" पृष्ठ देखें।

इस वेबसाइट पर श्री गुरु रविदास जी से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हैं।

* श्री गुरु रविदास जी की वाणी एवं उसकी व्याख्या सहित गुटका साहिब नि:शुल्क प्राप्त करने के लिए संपर्क करें :

रूप लाल रूप, मोबाइल : +91 94652 29722